

देश में भ्रष्टाचार का खंड बन गया है झारखंड



भ्रष्टाचार के मामले सामने आने पर क्षेत्रीय दलों का प्रयास यही रहता रहा है कि इसे केंद्र की भाजपा सरकार की साजिश करार दिया जाए। कांग्रेस ने इन दलों के भ्रष्टाचार के मामलों में संरक्षक की भूमिका निभाई है।

गैर राजनीतिक दलों के लिए देश में व्याप्त भ्रष्टाचार कोई चुनावी मुद्दा नहीं रह गया है। यही वजह है कि खासतौर से क्षेत्रीय दलों की सरकारों में बेशर्मा से लूटने की होड़ मची हुई है। झारखंड में एक मंत्री के निजी सहायक के नौकर के घर से मिले करीब 35 करोड़ रुपए मिलने पर किसी भी दल ने कठोर कार्रवाई की मांग तो दूर बल्कि इस भारी-भरकम भ्रष्टाचार के लिए अफसोस तक जाहिर नहीं किया। यह पहला मौका नहीं है जब इंडिया गठबंधन में शामिल दलों की असलियत उजागर हुई हो। इससे पहले भी असीम सुखियों में रहे भ्रष्टाचार के मामलों में भी क्षेत्रीय दलों की सत्तारूढ़ सरकारों के काले कारनामों सामने आ चुके हैं।

भ्रष्टाचार के मामले सामने आने पर क्षेत्रीय दलों का प्रयास यही रहता रहा है कि इसे केंद्र की भाजपा सरकार की साजिश करार दिया जाए। कांग्रेस ने इन दलों के भ्रष्टाचार के मामलों में संरक्षक की भूमिका निभाई है। कारण स्पष्ट है यदि कांग्रेस क्षेत्रीय दलों के भ्रष्टाचार के मामले उठाती है तो उसे अपनी गिरेबां में भी झानना होगा। इससे ये दल एक-दूसरे के भ्रष्टाचार के मामलों में छिछोलेदार करने लगेंगे। ऐसी हास्यास्पद स्थिति से बचने के लिए ये दल एक-दूसरे के भ्रष्टाचार का जिक्र नहीं करते हैं। कांग्रेस ने भ्रष्टाचार के मामलों में मौन साधे रखा है। यहां तक की कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के घोषणा पत्र में भ्रष्टाचार का जिक्र तक करना जरूरी नहीं समझा। कांग्रेस को अंदाजा था कि

इसका जिक्र करते ही भाजपा गठबंधन खिल्ली उड़ाने से चूकेगा नहीं। यही वजह रही कि कांग्रेस घोषणा पत्र में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के खाम्ते को लेकर कोई वादा नहीं किया। आश्चर्य यह है कि झारखंड के ग्रामीण विकास मंत्री और कांग्रेस नेता आलमगीर आलम के निजी सचिव संजीव लाल के धरेलू सहयोगी जहांगीर के यहां छाप मार कर प्रवर्तन निदेशालय ने 35 करोड़ रुपए बरामद किए। इस पर भी मंत्री आलम ने त्याग पत्र देना जरूरी नहीं समझा। झारखंड में सत्ता में शामिल कांग्रेस ने आलम के इस्तीफा की मांग तक नहीं की। अलबत्ता कांग्रेस ने इससे अपना दामन बचाने की कोशिश जरूर की। लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र में आयोजित राहुल गांधी की सभा में मंच पर कांग्रेस कोटे से ग्रामीण विकास मंत्री बने आलमगीर आलम को जगह नहीं मिली। कांग्रेस ने आलमगीर को महज यह संदेश देकर औपचारिकता निभाई की पहले जांच से बरी होकर आओ।

इससे पहले झारखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन भी भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार हो चुके हैं। सोरेन को जमानत नहीं मिल सकी है। पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन 6 अक्टूबर 2023 को नई हेमंत सोरेन को कथित भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार किया गया था। जैसा कि अक्सर होता है हर भ्रष्टाचारी ऐसे मामलों को फसाने की साजिश करार देता है, इसी तर्ज पर सोरेन ने भी आरोप से इनकार किया। कांग्रेस ने सोरेन की गिरफ्तारी की निंदा की और इसे संयवाद के लिए झटका बताया था। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा था कि भ्रष्टाचार में डूबी भाजपा लोकतंत्र को नष्ट करने का अभियान चला रही है।

कांग्रेस यह भूल गई कि पिछले साह दिसंबर में भी झारखंड में कांग्रेस के राज्यसभा सांसद और कारोबारी धीरज साहू के ठिकानों से

इनकम टैक्स ने 350 करोड़ रुपये से ज्यादा कैश बरामद किया था। इस पर साहू ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि छापेमारी में जो कैश बरामद किया गया है, वो मेरी शराब की कंपनियों का है। शराब का कारोबार नकदी में ही होता है और इसका कांग्रेस पार्टी से कोई संबंध नहीं है। झारखंड से कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू के ठिकानों से 290 करोड़ रुपये से ज्यादा कैश मिला था। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने साहू से जुड़े ओडिशा और झारखंड के उनके ठिकानों पर छापेमारी की। इस छापेमारी के दौरान विभाग को अलमारी में करोड़ों रुपये भरे हुए मिले। धीरज साहू के पास कितना कैश बरामद हुआ है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लगातार तीन दिन छापेमारी कर नोट गिनने पड़े। आलम ये रहा है कि नोट गिनने के लिए लाई गई मशीनों की क्षमता कम पड़ गई। नोट गिनने के लिए तीन दर्जन मशीनों को मंगाया गया था, जो कम पड़ गई। पीएम मोदी ने ओडिशा की रेली में किया नकद बरामदगी का जिक्र चुनाव प्रचार के लिए ओडिशा पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नकद बरामदगी का जिक्र भी किया। उन्होंने केंद्र द्वारा जांच एजेंसियों के कथित दुरुपयोग पर विपक्ष के आरोप का जवाब देते हुए पूछा कि पड़ोसी राज्य झारखंड में नोटों के पहाड़ मिल रहे हैं।

मोदी ने कहा कि अब आप ही बताइए, अगर मैं उनकी चोरी, उनकी कमाई, उनकी लूट बंद कर दूं, तो क्या वे मोदी को गाली देगे या नहीं? गालियों के बावजूद, क्या मुझे आपका पैसा नहीं बचाना चाहिए। झारखंड और भ्रष्टाचार का चोली दामन का साथ है। संयुक्त बिहार में ही झारखंड में हुए चारा घोटाले से शुरू हुई थी और बड़े भ्रष्टाचार की कहानी आज भी बदनुर जारी है। चारा घोटाले में राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का नाम सामने आया था। इस घोटाले में

पशुओं के चारे की चोरी की गई। 950 करोड़ के इस घोटाले में 53 मामले दर्ज किए गए थे, जबकि कुल 170 आरोपी बने गए थे। इस मामले का खुलासा 1996 में हुआ था। इसके बाद मधु कोड़ा के मुख्यमंत्री काल मे शेल कंपनियों के जरिए काली कमाई को सफेद करने का मामला सामने आया। करीब 4 हजार करोड़ का ये घोटाले अपने आप में देशभर के बड़े घोटालों में से एक था। आज भी मामला अदालत में है। मधु कोड़ा को मुख्यमंत्री पद से हटाने के बाद जेल भी जाना पड़ा था। अलग झारखंड राज्य की मांग को अटल बिहारी वाजपेयी की तत्कालीन सरकार ने वर्ष 2000 में पूरा तो कर दिया था। लेकिन जिस मकसद से अलग राज्य की मांग हो रही थी, वह मकसद पीछे छूट गया। झारखंड में लूट का झिलसिला शुरू हो गया। बिहार से अलग झारखंड बनाने की मांग इसलिए हो रही थी कि इसका समुचित विकास अपने ही संसाधनों से सुचारू ढंग से हो पाएगा। इसकी झलक भी पहले बजट में दिखाई थी। राज्य सरकार का शुरूआती बजट सरफलस था। झारखंड अलग राज्य बनने के बाद जिस विकास और खुशहाली का सपना लोगों ने देखा था, वह तो पूरा नहीं हुआ, उल्टे यहां लूट की संस्कृति दिन प्रतिदिन मजबूत होती गई। हाल के तीन साल में जिस तरह नौकरशाही और नेताओं के घर से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम नोटों का जखीरा बरामद करती आ रही है, उससे तो झारखंड का अघोषित नाम लूटखंड हो गया है।

गौरतलब है कि दिल्ली शराब घोटाले के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी के नेता मनीष सिसौदिया और संजय सिंह पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं। ईडी तीन दक्षिणी राज्यों तेलंगना, केरल और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों के खिलाफ मनी लॉर्डिंग के आरोपों की भी जांच कर रही है। सभी नेताओं ने अपने ऊपर लगे आरोपों से इनकार किया है। क्षेत्रीय दल चाहे झारखंड का हो, दिल्ली, तमिलनाडू या फिर पश्चिमी बंगाल के, सब आकड़ तक भ्रष्टाचार के मामलों में डूबे हुए हैं। इन राज्यों के विपक्षी दलों के करीब एक दर्जन नेता जेलों में बंद हैं। इनमें से ज्यादातर की जमानत तक नहीं हो सकी है। इसी से विपक्षी दलों का यह आरोप कमजोर पड़ जाता है कि केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा जांच एजेंसियों को दुरुपयोग राजनीतिक रजिष्टर के कारण कर रही है। अभी तक किसी भी न्यायालय ने नेताओं के भ्रष्टाचार के भी मामले में यह निर्णय नहीं दिया कि केंद्रीय एजेंसियों ने दुर्भावनावाह कार्रवाई की है। कांग्रेस इस मुद्दे पर मुह इसलिए नहीं खोल सकती है, क्योंकि कांग्रेस का इतिहास और वर्तमान भी भ्रष्टाचार के आरोपों से रंगा हुआ है।

भारत के टॉप न्यूट्रिशन संस्थान ने मिट्टी के बर्तनों को खाना पकाने के लिए सर्वश्रेष्ठ बर्तन घोषित किया, नॉन-स्टिक पैन के बारे में दी चेतावनी!



नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन (एनआईएन) ने भारतीयों के लिए आहार संबंधी दिशानिर्देशों को अपडेट किया है, जिसमें इसकी पर्यावरण-मित्रता और खाद्य संरक्षण गुणों के कारण खाना पकाने के लिए मिट्टी के बर्तनों के उपयोग को सबसे सुरक्षित बताया गया है। एनआईएन धातु के बर्तनों में अम्लीय खाद्य पदार्थों के असुरक्षित भंडारण और नॉन-स्टिक पैन के अधिक गर्म होने के बारे में भी चेतावनी जारी करता है।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान (एनआईएन) ने हाल ही में भारतीयों के लिए आहार दिशानिर्देशों को अपडेट किया। संशोधन में नई वैज्ञानिक खोजों, विकसित होती जीवनशैली, प्रचलित बोनारियों और खान-पान की बदलती आदतों को ध्यान में रखा गया है। एनआईएन के अनुसार खाना पकाने के लिए मिट्टी के बर्तनों को सबसे सुरक्षित बर्तन बताया है और नॉन-स्टिक बर्तनों के बारे में चेतावनी दी है।

आपको बता दें कि, एनआईएन ने अपने दिशानिर्देशों में कहा कि मिट्टी के बर्तन सबसे सुरक्षित कुकवेयर है जो पर्यावरण के अनुकूल हैं, भोजन तैयार करने के लिए कम तेल की आवश्यकता होती है और भोजन के पोषण को बरकरार रखता है। वहीं एनआईएन ने धातु, स्टील, नॉन-स्टिक पैन और ग्रेनाइट पत्थरों के उपयोग के लिए दिशानिर्देश भी जारी किए हैं।

मेटल
चटनी और सांबर जैसे एसिटिक एसिड खाद्य पदार्थों को एल्युमीनियम, लोहे, बिना लाइन वाले पीतल या तांबे के बर्तन में रखना असुरक्षित है।

स्टेनलेस स्टील
स्टेनलेस स्टील को आम तौर पर सुरक्षित माना जाता है, यह रिसाव नहीं करता है।

नॉन-स्टिक पैन
नॉन-स्टिक पैन को यदि ताप 170°C से अधिक हो तो जोखिम। यदि कोटिंग घिस गई है या क्षतिग्रस्त हो गई है तो उसे हटा दें।

ग्रेनाइट पत्थर
ग्रेनाइट पत्थर तब तक सुरक्षित माना जाता है जब तक इसमें टेफ्लोन कोटिंग न हो। यदि हां, तो मध्यम-उच्च तापमान उचित है।

रोजाना 20-25 ग्राम चीनी खाएं
आहार दिशानिर्देशों के अनुसार, भारतीयों को अब अपने दैनिक चीनी सेवन को 20-25 ग्राम तक सीमित करने की सलाह दी जाती है, जो लगभग एक चम्मच के बराबर है, क्योंकि यह चीनी प्राकृतिक कार्बोहाइड्रेट से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, दिशानिर्देश प्रोटीन सप्लीमेंट के उपयोग को हतोत्साहित करते हैं और तेल की खपत में कमी की वकालत करते हैं। इसके अलावा, अद्यतन अनुशंसाएं एयर-फ्राइ और ग्रेनाइट से लेपित कुकवेयर के उपयोग का समर्थन करती हैं।

एनआईएन ने पहली बार पैकेज्ड फूड लेबल की व्याख्या के लिए दिशानिर्देश भी पेश किए हैं।

कम तेल में बनाएं खाना
भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल ने बुधवार को संशोधित दिशानिर्देशों का जारी किया। अपडेट दिशानिर्देशों का एक उल्लेखनीय सुझाव खाना पकाने के तेल पर निर्भरता कम करना और नट्स, तिलहन और समुद्री भोजन जैसे स्रोतों से आवश्यक फैटी एसिड प्राप्त करना है। इसके अलावा, अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की खपत के प्रबंधन पर सलाह भी प्रदान की गई है।

प्रोटीन पाउडर के सेवन करने से बचें
संशोधित आहार दिशानिर्देश उनके लाभों और जोखिमों के बीच असमानता के कारण प्रोटीन की खुराक से बचने पर जोर देते हैं। अंडे, डेयरी दूध, सोयाबीन, मटर और चावल जैसी सामग्रियों से प्राप्त प्रोटीन पाउडर को नियमित सेवन से सावधान किया जाता है। दिशानिर्देश तैयार करने के लिए जिम्मेदार समिति की अध्यक्ष डॉ. हेमलता आर ने अतिरिक्त शर्करा, गैर-कैलोरी मिठास और कृत्रिम योजक युक्त प्रोटीन पाउडर के बारे में चिंताओं पर प्रकाश डाला, जो घातक हो सकते हैं।

जानें क्या है हीटस्ट्रोक, गर्मियों में क्यों होते हैं इसके अधिक मामले



गर्मियों के मौसम में बाहर तापमान अधिक होता है। इस दौरान तापमान अधिक होने पर अमूमन शरीर खुद को ठंडा रखने के लिए तापमान को सामान्य कर लेता है। डॉक्टर का कहना है कि 98.7 के स्तर पर ही अमूमन शरीर का तापमान होना चाहिए। अगर तापमान इससे अधिक होता है और मरीज को अन्य समस्याएं होने लगती हैं तो इसे हीट स्ट्रोक माना जाता है। हीटस्ट्रोक पर हमारे साथ बात करने के लिए मौजूद हैं डॉक्टर प्रफान अमर ने।

मरीज को होती है ये समस्याएं
हीट स्ट्रोक होने पर मरीज के शरीर में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। कई बार मरीज को उल्टी, चक्कर आना, पसीना आना आम होता है। हीट स्ट्रोक में भी तीन स्तर होते हैं। बता दें कि मौसम बदलने पर शरीर खुद ही तापमान को मॉटेन करने की कोशिश करता है। गर्मियों के मौसम में कई बार हीट स्ट्रोक हो जाता है क्योंकि व्यक्ति अधिक समय तक धूप में रहता है। हमारे सेंद्रल नर्वस सिस्टम में अच्छा काम नहीं होता है। इस कारण शरीर का तापमान अधिक हो जाता है।

लू लगने के कारण जानें यहां
लू हवाएं यहां काफी अधिक होता है। आमतौर पर एक व्यक्ति के शरीर का तापमान 25 डिग्री तक होना चाहिए वहीं बाहर 40 डिग्री से 50 डिग्री तक तापमान रहता है। ऐसे में शरीर का तापमान जब अधिक बढ़ने लगता है तो ये स्थिति घातक होती है। इससे बचने के लिए घर से बाहर निकलते समय धूप से बचने के सभी उपाय करें, जैसे चश्मा लगाएं, सिर और आंख ढक कर रखें।

लू लगने पर दिखते हैं ये लक्षण
हीट स्ट्रोक से पहले हीट क्रैम्प होता है जिसमें सिर दर्द, प्यास अधिक लगना, हाथ पैरों में दर्द की शिकायत होती है। ये पहली स्टेज होती है। दूसरी स्टेज हीट एग्जॉशन की होती है, जिसमें शरीर का तापमान अधिक हो जाता है। शरीर का तापमान 40 डिग्री के आसपास हो जाता है। इस दौरान मरीज को पसीने आते हैं, शरीर ठंडा पड़ जाता है, पसीना भी निकलता है। ऐसे में शरीर में मरीज को प्यास अधिक लगती है, मुंह सूखता है, सिरदर्द की शिकायत होती है। हीट स्ट्रोक होने पर मरीज को वॉर्मिंग और चक्कर आने की

शिकायत मरीजों का होती है।

डीहाइड्रेशन से कितना अलग है हीटस्ट्रोक
आमतौर पर व्यक्ति को डीहाइड्रेशन की शिकायत कभी भी हो सकती है। वहीं हीटस्ट्रोक सिर्फ गर्मियों के मौके पर ही होता है। मगर डीहाइड्रेशन कभी भी हो सकता है। डीहाइड्रेशन के साथ हीटस्ट्रोक हो ये जरूरी नहीं है मगर हीटस्ट्रोक होने पर डीहाइड्रेशन जरूर होता है। डीहाइड्रेशन होने पर शरीर में पानी की कमी होती है। पानी की कमी होने पर ही शरीर का ब्लड प्रेशर भी ऊपर नीचे होता है। ऐसे में शरीर में पानी की कमी नहीं होनी चाहिए।

ऐसे बचें हीटस्ट्रोक से
बिना वजह बाहर नहीं जाना चाहिए। जरूरत पड़ने पर बाहर जाने की स्थिति में गमछा, छाता, कप आदि का उपयोग करें। बाहर जाएं तो अधिक से अधिक पानी पिएं। पानी के अलावा नारियल पानी, जूस पानी लाभदायक होता है। घर से बाहर निकलने से पहले सत्तू का सेवन करना भी उपयोगी होता है। हर स्थिति में खुद को हाइड्रेट करके रखना चाहिए। अधिक देर तक भी धूप के कॉन्टैक्ट में नहीं रहना चाहिए। हीटस्ट्रोक आमतौर पर अधिक देर तक धूप में नहीं रहना चाहिए। गर्मियों के मौसम में अल्कोहल लेने से भी बचना चाहिए।

ऐसे लें ट्रीटमेंट
हीटस्ट्रोक और तीनों स्टेज में मरीज को तत्काल छाया में ले जाना चाहिए। धूप में मरीज को नहीं रखना चाहिए। मरीज के शरीर पर पानी का छिड़काव करना चाहिए। ऐसे उपाय करने चाहिए जिससे मरीज के शरीर का तापमान थोड़ा कम हो जाए। इसके बाद मरीज को अस्पताल ले जाएं। मरीज के शरीर को ठंडा करने के लिए आईस बाथ, एसी में बैठाना, पंखा चलाना, स्पंज बाथ दिलाना आदि उपाय करने से भी लाभ होता है। हालांकि डॉक्टर का कहना है कि इस समस्या को दूर करने के लिए सिर्फ डॉक्टर की मदद ही लेनी चाहिए और अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। दरअसल शरीर में पानी की अधिक कमी होने पर अधिक समय तक इस स्थिति को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ICMR ने प्रोटीन सप्लीमेंट के खिलाफ चेतावनी दी, डैमेज हो सकती है किडनी

इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन (एनआईएन) ने भारतीयों के लिए आहार दिशानिर्देश जारी किए हैं जिसमें उन्होंने प्रोटीन सप्लीमेंट के सेवन पर प्रकाश डाला है जो आमतौर पर विशेष रूप से युवाओं के बीच में ज्यादा चलन में है।

148 पेज के दिशानिर्देशों में, आईसीएमआर ने बांडी मास बढ़ाने के लिए प्रोटीन सप्लीमेंट के सेवन के खिलाफ चेतावनी दी है, जो युवाओं द्वारा निर्धारित एक आम फिटनेस प्रवृत्ति है।

प्रोटीन की खुराक उन व्यक्तियों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो गई है जो अपने एथलेटिक प्रदर्शन को बढ़ाना चाहते हैं, मांसपेशियों के विकास में सहायता करना चाहते हैं, या अपनी दैनिक प्रोटीन की जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं।

प्रोटीन पाउडर पर आईसीएमआर ने क्या दिशानिर्देश जारी किए

यह Whey प्रोटीन पर जोर देता है, जो ब्रॉन्ड-चेन अमीनो एसिड या बीसीएए में समृद्ध है। यह बीसीएए गैर-संचारी रोगों के उच्च जोखिम से जुड़े हैं।

ल्यूसीन, आईसोल्यूसीन और वेलिन सहित ब्रॉन्ड-चेन अमीनो एसिड (बीसीएए), प्रोटीन

संश्लेषण, मांसपेशियों की मरम्मत और ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मांसपेशियों की वृद्धि बढ़ाने, व्यायाम प्रदर्शन में सुधार और थकान को कम करने के लिए बीसीएए के साथ पूरक एथलीटों और बॉडीबिल्डरों के बीच लोकप्रिय है। शोध से पता चलता है कि बीसीएए यकृत रोग वाले व्यक्तियों को भी लाभ पहुंचा सकता है, इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार कर सकता है और वजन घटाने में सहायता कर सकता है। हालांकि, इसके अत्यधिक सेवन से इंसुलिन प्रतिरोध और न्यूरोट्रांसमीटर संतुलन में व्यवधान जैसे प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकते हैं।

हालांकि प्रोटीन सप्लीमेंट या प्रोटीन पाउडर सोयाबीन जैसे पौधे-आधारित स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं, लेकिन आईसीएमआर विपणन उद्देश्यों के लिए उनमें इस्तेमाल किए जाने वाले एडिटिव्स के खिलाफ चेतावनी देता है। अतिरिक्त शर्करा, कृत्रिम मिठास और स्वाद प्रोटीन पाउडर से मिलने वाले स्वास्थ्य लाभ को कम कर देते हैं।

आईसीएमआर ने कहा है, 'अनाज का उचित संयोजन: 3:1 के अनुपात में दालें या प्रति दिन 80 ग्राम मांस के साथ 30 ग्राम अनुशंसित स्तर की दालों को शामिल करने से सामान्य व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रोटीन की गुणवत्ता

गर्मियों में पाचन संबंधी समस्या से राहत पाने के लिए करें इस पानी का सेवन, चुटकियों में मिलेगा आराम

गर्मियों में पेट की समस्याएं बढ़ जाती हैं। पेट की समस्याओं से निजात पाने के लिए सौंफ का पानी रामबाण इलाज है। इसमें कई पाचनीय गुण पाए जाते हैं। रोजाना सौंफ के पानी का सेवन करने से कई पेट संबंधी समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

गर्मियों में पेट की समस्याएं बढ़ जाती हैं। पेट की समस्याओं से निजात पाने के लिए सौंफ का पानी रामबाण इलाज है। इसमें कई पाचनीय गुण पाए जाते हैं। यदि आप रोजाना सौंफ के पानी का सेवन करते हैं, तो गैस, कब्ज, तनाव और पेट दर्द की समस्या से राहत पा सकते हैं। बता दें कि सौंफ में प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है। साथ ही इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण भी पाए जाते हैं। जो आपके पाचन तंत्र को सुधारने में सहायक होता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए आपको सौंफ के पानी के फायदों के बारे में बताने जा रहे हैं।

सौंफ का पानी
सौंफ का पानी बनाने के लिए सबसे पहले 1 बड़ा चम्मच सौंफ को 1 कप पानी में रातभर के लिए भिगो दें। फिर सुबह इसको 5 मिनट उबाल लें। जब यह हल्का ठंडा हो जाए, तब इसका सेवन करें



पाचन में सुधार
बता दें कि सौंफ में पाचन को सुधारने वाले गुण पाए जाते हैं। जो गैस, ब्लोटिंग, अपच और एरिडिटी की समस्या को कंट्रोल करता है। साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण पेट की सूजन व अन्य पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने में मदद करता है।

ठीक होगी बदहजमी
सौंफ के सेवन से बदहजमी की समस्या ठीक हो सकती है। पेट में बनने वाले गैस्ट्रिक एसिड की मात्रा को सौंफ का पानी कंट्रोल करने में मदद करता है।

कब्ज होगी दूर
इसके साथ ही सौंफ का पानी कब्ज की समस्या

दूर करने में भी सहायक होता है। क्योंकि सौंफ में फाइबर की अधिक मात्रा पाई जाती है। सौंफ के बीज में फेन्कोन, एस्ट्रैगोल और एनेथोल पाए जाते हैं। जो कब्ज और डाइजेशन को समर्थन देते हैं। ये लक्षण लैक्टोज असहिष्णुता, कुछ प्रोटीन स्रोतों के प्रति संवेदनशीलता, या कृत्रिम मिठास या गाढ़ेपन जैसे अतिरिक्त अवयवों की उपस्थिति के कारण हो सकते हैं।

नोएडावासी के लिए जरूरी खबर, सेक्टर 31 से 18 तक बंद हुई एलिवेटेड रोड; पढ़ें डायवर्जन रूट

सेक्टर 31 से 18 तक सरफेसिंग का काम होने के कारण एलिवेटेड रोड को बंद कर दिया गया है। सेक्टर-67/थाना फेस-3 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर 60 अंडरपास के ऊपर से लेफ्ट टर्न कर एमपी 3 मार्ग होशियारपुर सिटी सेंटर सेक्टर 37/बोटैनिकल गार्डन से अपने गंतव्य की ओर जा सकेंगे।

नोएडा। एलिवेटेड रोड पर नोएडा प्राधिकरण की ओर से चौथे चरण में सेक्टर-31-25 से सेक्टर-18 तक री सरफेसिंग का काम होगा, जिससे मार्ग पर वाहनों का प्रतिबंधित कर दिया गया है। वहीं दूसरी ओर सेक्टर-60 से सेक्टर-33 इस्कॉन मंदिर लूप तक एलिवेटेड मार्ग खोल दिया गया है। इससे एलिवेटेड के एक हिस्सा पर वाहन फर्राटा भरने लगे हैं। इससे शापिक्स मॉल, एआरटीओ कार्यालय, इस्कॉन मंदिर के पास ट्रैफिक जाम कम होने की उम्मीद है।

ऐसा रहेगा यातायात

● सेक्टर-33 इस्कॉन मंदिर से सेक्टर-31.25 चौक होकर सेक्टर-18, नोएडा ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे की ओर जाने वाला यातायात सेक्टर-35 मोरना होकर एमपी 3 मार्ग से अपने गंतव्य को जा सकेगा।

● सेक्टर-33 इस्कॉन मंदिर से सेक्टर-31.25 चौक होकर सेक्टर-18, चिल्ला/डीएनडी की ओर जाने वाला यातायात सेक्टर-31-25 चौक से पूर्व



यूटर्न कर एडोब चौक से स्टेडियम चौक होकर एमपी-1 मार्ग से अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

● सेक्टर-67/थाना फेस-3 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर 60 अंडरपास के ऊपर से लेफ्ट टर्न कर, एमपी 3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर 37/बोटैनिकल गार्डन से अपने गंतव्य को ओर जा सकेंगे।

● सेक्टर-62/मॉडल टाउन, एनएच-24 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-60 अंडरपास से होकर, सेक्टर-71/52 होते हुए एमपी-3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर 37/बोटैनिकल गार्डन का प्रयोग कर अपने गंतव्य को ओर जा सकेंगे।

● सेक्टर-71 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-52

मेट्रो होते हुए एमपी-3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर-37/ बोटैनिकल गार्डन का प्रयोग कर अपने गंतव्य को ओर जा सकेंगे।

● किसान चौक, पथला की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-71 अंडरपास होकर एमपी 3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर-37/बोटैनिकल गार्डन का प्रयोग कर अपने गंतव्य को ओर जा सकेंगे।

RBI ने आर लक्ष्मी कंठ राव को नया कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया, संभालेंगे ये जिम्मेदारियां



रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने आर लक्ष्मी कंठ राव को तत्काल प्रभाव से कार्यकारी निदेशक (ED) नियुक्त किया है। राव ED के तौर पर प्रमोटे होने से पहले राव डिपार्टमेंट ऑफ रेगुलेशन में चीफ जनरल मैनेजर-इन-चार्ज के तौर पर काम कर रहे थे। राव ने बैंक व NBFC रेगुलेशन सुपरविजन ऑफ बैंक्स और कंज्यूमर प्रोटेक्शन जैसे क्षेत्रों में काम किया है।

मुंबई। रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने आर लक्ष्मी कंठ राव को तत्काल प्रभाव से कार्यकारी निदेशक (ED) नियुक्त किया है। राव ED के तौर पर प्रमोटे होने से पहले राव डिपार्टमेंट ऑफ रेगुलेशन में चीफ जनरल मैनेजर-इन-चार्ज के तौर पर काम कर रहे थे।

तीन साल से आरबीआई के साथ राव के पास रिजर्व बैंक में तीन साल तक काम करने का अनुभव है।

उन्होंने बैंक व NBFC रेगुलेशन, सुपरविजन ऑफ बैंक्स और कंज्यूमर प्रोटेक्शन जैसे क्षेत्रों में काम किया है।

राव ने आरबीआई चेन्नई में बैंकिंग लोकपाल (Banking Ombudsman) और लखनऊ में उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय निदेशक के रूप में भी काम किया था। वह कई कमेटी और वर्किंग ग्रुप के मंबर के रूप में भी काम कर चुके हैं। राव नीति निर्माण में योगदान देते रहे हैं। राव बतौर एजीक्यूटिव डायरेक्टर डिपॉजिट इश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन, राइट टु इंफॉर्मेशन एक्ट (FAA), डिपार्टमेंट ऑफ कम्युनिकेशन को देखेंगे।

कौन है लक्ष्मी कंठ राव राव के पास कॉमर्स में प्रेजेंट डिग्री है। उनके पास श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (फाइनेंस) में मास्टर डिग्री और TIRUM (IBF) में डिप्लोमा है। वह IIBF के सर्टिफाइड एसोसिएट भी हैं।

पेट्रोल पंप पर कार में लगी आग, कर्मियों की सजगता से टला बड़ा हादसा

पेट्रोल पंप कर्मियों की सजगता से शनिवार को एक बड़ा हादसा होने से बच गया। अगर कर्मियों का कुछ मिनट बाद ध्यान जाता तो शायद बड़े हादसे हो सकता था। शनिवार दोपहर करीब दो बजे मदनपुरी रोड स्थित लक्ष्मी बाजार के सामने पेट्रोल पंप पर समसपुर निवासी विकास रेनाल्ट कंपनी की डैटसन गाड़ी में पेट्रोल डलवाने आए थे।

गुरुग्राम। पेट्रोल पंप कर्मियों की सजगता से शनिवार को एक बड़ा हादसा होने से बच गया। अगर कर्मियों का कुछ मिनट बाद ध्यान जाता तो शायद बड़े हादसे हो सकता था। शनिवार दोपहर करीब दो बजे मदनपुरी रोड स्थित लक्ष्मी बाजार के सामने पेट्रोल पंप पर समसपुर निवासी विकास रेनाल्ट कंपनी की डैटसन गाड़ी में पेट्रोल डलवाने आए थे। पेट्रोल डलवाने के दौरान कार के बोनट से धुआं निकल रहा था। तभी एक कर्मी की नजर उस पर पड़ गई। उन्होंने तुरंत ही अपने अन्य साथियों



के साथ मिलकर कार को धक्का देकर पंप के बाहर रोड पर ले आए।

टायरों में लगी आग कार जैसे ही पंप से बाहर रोड पर पहुंची तो देखते-देखते कार में लग गई। कार के साइड में खड़ी रेनाल्ट की काइजर कार भी आग की चपेट में आ गई। काइजर गाड़ी के दो टायरों में आग लग गई।

कर्मियों ने पेट्रोल पंप पर रखे अग्निशमन यंत्र से आग बुझाने की कोशिश की लेकिन आग पर काबू नहीं पा सके। उन्होंने इसकी सूचना दमकल विभाग को दी गई। सूचना पर मौके पर पहुंची दमकल गाड़ी ने चंद मिनट में आग पर काबू पा लिया।

CNG वाहन चालक ध्यान दें! बढ़ती गर्मी को लेकर पुलिस ने जारी की एडवाइजरी; जरूर करें पालन

बढ़ती गर्मी को लेकर सीएनजी वाहन चालकों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। सीएनजी वाहन चालक प्रत्येक तीन साल के अंतराल में सीएनजी सिलेंडर की हाइड्रोजन टेस्टिंग (सरकार की गाइडलाइन के अनुसार) कराएं। सीएनजी वाहन चालक वाहन चलाते समय विशेष रूप से धुमपान न करें। चालक अपने वाहन में अग्निशमन यंत्र रखें। ये यंत्र चालू हालत में होने चाहिए ताकि आपातकालीन स्थिति में प्रयोग किए जा सकें।

फर्दाबाद। अब तेज गर्मी पड़ने लगी है। इसे देखते हुए पुलिस ने सीएनजी वाहन इस्तेमाल करने वाले लोगों के लिए एडवाइजरी जारी की है। अक्सर गर्मी में सीएनजी वाहनों में आग लगने की घटनाएं सामने आती हैं। इससे बड़ा नुकसान हो जाता है। इसलिए पुलिस ने ऐसे वाहन चालकों को सावधानी बरतने की सलाह दी है और सुझाव भी साझा किए हैं।

यह है सावधानियां सीएनजी वाहन चालक प्रत्येक तीन साल

के अंतराल में सीएनजी सिलेंडर की हाइड्रोजन टेस्टिंग (सरकार की गाइडलाइन के अनुसार) कराएं। सीएनजी वाहन चालक वाहन चलाते समय विशेष रूप से धुमपान न करें। चालक अपने वाहन में अग्निशमन यंत्र रखें। ये यंत्र चालू हालत में होने चाहिए ताकि आपातकालीन स्थिति में प्रयोग किए जा सकें।

कंपनी फिटिड सीएनजी किट का प्रयोग करें चालक सदैव कंपनी फिटिड सीएनजी किट का प्रयोग करें। अलग से सीएनजी किट लगवाने से बचे। सीएनजी गैस रिसाव से बचाव के लिए सिलेंडर को समय-समय पर लीकेज टेस्ट कराएं। कंपनी की गाइडलाइंस के अनुसार गाड़ी का एयर फिल्टर प्रत्येक सीएनजी वाहन में 10 हजार किलोमीटर पर बदलवाना जरूरी होता है। सीएनजी वाहन में हमेशा सीएनजी किट वारंटी वाली व इश्योरेंस के साथ प्रयोग करें।

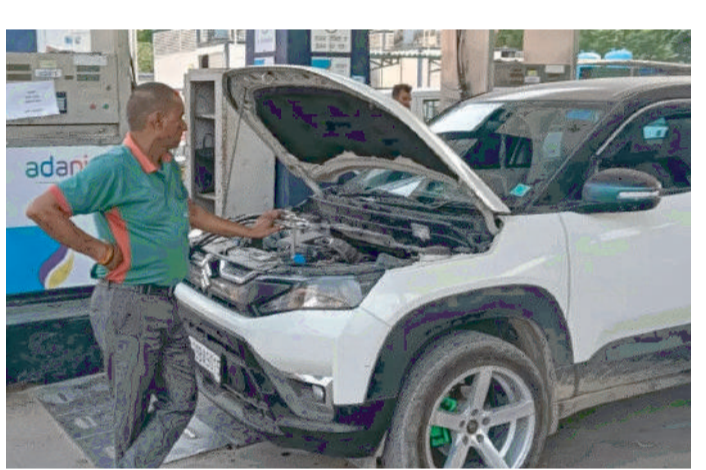
अगर सीएनजी वाहन को चालक अधिक दूरी तक प्रयोग कर रहे हैं तो रास्ते में कुछ

समय रुककर वाहन चलाएं। सीएनजी गाड़ी में सीएनजी डलवाते समय पंप पर धुपान न करें। गाड़ी को बंद कर दें। उतर कर ही सीएनजी डलवाएं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग न करें।

सस्ती के चक्कर में बड़ रहे सीएनजी वाहन दरअसल पेट्रोल-डीजल महंगा होने के कारण गाड़ियों में कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस (सीएनजी) किट लगवाने वालों की संख्या बढ़ रही है। लेकिन बहुत कम लोगों को जानकारी होती है कि सीएनजी किट लगवाने के बाद क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

आम तौर पर सीएनजी किट लगवाने के लिए लोग कम कीमत वाली किट को प्राथमिकता देते हैं। ऐसे लोग चाइनीज किट लगवाते हैं। यह खराब रेटिंग के साथ आती है। इस किट को लोग सस्ते के चक्कर में लगवा लेते हैं।

आग लगते ही लाक हो जाता है सिस्टम जब किसी कार में आग लगती है तो सबसे पहले कार में लगे इलेक्ट्रिकल यूनिट जाम हो जाते हैं। पावर विंडो, सीट बेल्ट और सेंट्रल लाकिंग सिस्टम तक फेल हो जाते हैं, जिसकी



वजह से कार में बैठे लोगों को बाहर निकलने में काफी दिक्कतें आती हैं।

सीएनजी वाहन में आग की घटनाएं 10 मार्च 2024 को हाईवे स्थित एनएचपीसी चौक पर एक कार की टक्कर से सीएनजी आटो में आग लग गई। आटो चालक फंस गया और घुरी तरह से झुलस गया। 22 जुलाई 2023 को बाटा मेट्रो

स्टेशन के नीचे चलती सीएनजी कार में अचानक आग लग गई। कार में चालक सहित दो युवक सवार थे। समय रहते दोनों कार से बाहर आ गए।

अगस्त 2023 में सैनिक कालोनी के सामने हरियाणा रोडवेज की सीएनजी बस में अचानक से आग लग गई। गनीमत रही कि वक्त रहते ही सारी सवारियां बस से नीचे उतर गईं।

अरविंद केजरीवाल को मिली अंतरिम जमानत के सियासी मायने को ऐसे समझिए

मृत्युंजय दीक्षित

सुप्रीम कोर्ट के एक साहसिक निर्णय से जेल में बंद भारतीय राजनेताओं के चुनावों के दौरान बाहर आने और चुनाव प्रचार में अपनी भागीदारी जताने का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। समझा जाता है कि कोर्ट के इस उदार पहल से भारत में एक नई सियासी क्रांति का आगाज हो सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के एक साहसिक निर्णय से जेल में बंद भारतीय राजनेताओं के चुनावों के दौरान बाहर आने और चुनाव प्रचार में अपनी भागीदारी जताने का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। समझा जाता है कि कोर्ट के इस उदार पहल से भारत में एक नई सियासी क्रांति का आगाज हो सकता है।

ऐसा इसलिए कि अरविंद केजरीवाल को दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति 2021-22 में कथित अनियमितताओं से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग जांच के सिलसिले में विगत 21 मार्च 2024 को ईडी ने गिरफ्तार किया था। ईडी के इस निर्णय की तब बहुत आलोचना हुई थी, क्योंकि मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए ही उन्हें गिरफ्तार किया गया था, जो भारतीय राजनितिक इतिहास की अनोखी घटना बन चुकी है। इसी मामले में गत 8 मई 2024 को सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने सुनवाई की।

सुनवाई के दौरान ही न्यायमूर्ति खन्ना ने प्रवर्तन निदेशालय के वकील अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू से कहा था कि वह केजरीवाल को अंतरिम राहत पर श्रुक्वार को आदेश पारित कर सकते हैं। इससे एक दिन पहले भी यानी गत 7 मई को सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर कहा था कि मामले की सुनवाई जल्दी पूरी होने की उम्मीद नहीं है। ऐसे में कोर्ट लोकसभा चुनाव को देखते हुए केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने पर विचार कर सकता है।

हालांकि, कोर्ट ने शर्त रखी थी कि अगर चुनाव प्रचार के लिए जमानत दी जाती है तो वह मुख्यमंत्री के तौर पर काम नहीं करेंगे और न ही किसी फाइल पर हस्ताक्षर करेंगे। फिर भी दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल भिजवाने वाली ईडी परेशान हो

गई। आनन-फानन में ईडी ने एक हलफनामा दायर करके उनके अंतरिम जमानत का विरोध किया और कुछ अकादमिक दलीलें भी दीं। जिस पर केजरीवाल की लीगल टीम ने भी कड़ी आपत्ति जताई। जिसके दृष्टिगत सुप्रीम कोर्ट ने ईडी की सभी दलीलों को दरकिनारा करते हुए केजरीवाल को अंतरिम जमानत दे दी।

यही वजह है कि जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मिलने के सियासी और न्यायिक मायने तलाशे जा रहे हैं। क्योंकि यह एक असाधारण न्यायिक आदेश है, जो अब बौद्धिक विमर्श का मुद्दा भी बन चुका है। समझा जा रहा है कि कोर्ट के तारा निदेश से जहां देश में जनतांत्रिक भावनाओं को बल मिलेगा, वहीं भ्रष्टाचार और अपराध में शामिल राजनेताओं का मनोबल भी बढ़ेगा। क्योंकि जेल से बाहर रहने का एक अमोघ कानूनी हथियार कोर्ट के फैसले से उन्हें मिल चुका है। लिहाजा, आने वाले दिनों में जेल में बंद भारतीय राजनेताओं के द्वारा चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मांगे जाने के मामले बढ़ेंगे।

बता दें कि ईडी ने सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा देकर यह स्पष्ट कर दिया है कि केजरीवाल को किसी भी तरह की विशेष राहत देकर चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत दिया जाना समानता और कानून के शासन के लिए अभिशाप जैसा होगा। इससे ऐसी नजीर कायम होगी कि सभी अपराध करने वाले अनैतिक राजनेता चुनाव की आड़ में जांच को नजरअंदाज करेंगे, चाहे वो पंचायत चुनाव हो, नगरपालिका चुनाव हो, विधानसभा चुनाव हो या फिर आम चुनाव। यदि वे गिरफ्तार किए जाते हैं तो प्रचार के लिए अंतरिम जमानत मांगेंगे।

दो कदम आगे की सोचते हुए उसने तर्क दिया कि आजतक किसी भी राजनेता को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत नहीं दी गई, चाहे जेल में बंद वह व्यक्ति स्वयं भी प्रत्याशी क्यों न रहा हो, जबकि केजरीवाल तो उम्मीदवार भी नहीं हैं। ऐसे भी कई उदाहरण हैं कि अपराधी जेल से ही चुनाव लड़े और जीत भी गए, लेकिन उन्हें कभी इस आधार पर जमानत नहीं मिली। वैसे ही चुनाव प्रचार को तं सवैधानिक अधिकार है और न ही मौलिक अधिकार। लिहाजा ऐसा



होने से कानून का उल्लंघन करने वाले हर अपराधी को राजनीति बनने और वर्ष भर प्रचार के मोड़ में रहने का प्रोत्साहन मिलेगा। राजनेता आम आदमी से ऊपर होने और विशेष दर्जे का दावा नहीं कर सकते।

ईडी ने अपनी दलील में चुनाव प्रचार के लिए केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने का विरोध करते हुए कहा कि मतदान का अधिकार, जिसे कोर्ट ने पिछले पांच सालों में करीब 123 चुनाव हुए हैं और अगर किसी राजनेता को चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत दी जाने लगे तो किसी भी राजनेता को गिरफ्तार करके जेल में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि चुनाव तो सालभर चलने वाली गतिविधि है। हर

राजनीतिज्ञ हर स्तर पर यह दलील दे सकता है कि अगर उसे जमानत नहीं दी गई तो उसे न भरपाई होने वाला नुकसान होगा। ईडी ने स्पष्ट तौर पर कहा कि इस समय सिर्फ पीएमएलए कानून में ही बहुत से नेता जेल में हैं। उनके मामलों को जांचने के बाद सक्षम अर्थांति ने उनको हिरासत को सही ठहराया है। बहुत से नेता पीएमएलए के अलावा अन्य अपराधों में जेल में होंगे। ऐसे में अरविंद केजरीवाल के साथ विशेष व्यवहार करने और उनकी विशेष मांग स्वीकार करने का कोई कारण नहीं है।

उसने तो यहां तक कह दिया कि केजरीवाल ने कई समन के बाद भी जांच एजेंसी के सामने पेश न होने के पीछे पांच राज्यों में चुनाव का यही आधार दिया था। ऐसे में अगर कोर्ट ने केजरीवाल को अंतरिम जमानत दी तो उनके द्वारा आप के स्टार प्रचारक होने के आधार

पर प्रचार के लिए समन को नजरअंदाज करने का कारण बनाये जाने पर न्यायिक मुद्दा लग जाएगा। साथ ही प्रचार के लिए अंतरिम जमानत से प्रचार की इच्छा रखने वाले नेताओं का एक अलग वर्ग बन जायेगा। हालांकि कोर्ट ने ईडी की एक न सुनी और अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत देकर यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय लोकतंत्र को किंतु-परन्तु के आधार पर नहीं, बल्कि स्पष्ट और पारदर्शी नीतियों के आधार पर ही चलाया जाएगा। संभव है कि अगली संसद इससे सबक लेगी और नेताओं के लिए आवश्यक कानून बनाएगी या फिर पूर्व की विसंगतियों को दूर करेगी।

यह स्वाभाविक सवाल है कि जब चुनावी मौसम हो और दल विशेष का प्रमुख नेता ही जेल में हो तो उसकी पार्टी को सही जनादेश कैसे मिल पाएगा। शायद इसलिए कोर्ट ने अंतरिम जमानत की नहीं राह दिखा दी और सियासी नकेल अपने हाथों में रख ली।

आसान नहीं है सेकेंड हैंड इलेक्ट्रिक कार बेचना, बाजार विकसित होने में लगेंगे कई साल

कार डीलर्स भी अपने ग्राहकों को सेकेंड हैंड इलेक्ट्रिक कार के प्रति बहुत भरोसा नहीं दिला पाते हैं इसलिए वे सेकेंड हैंड इलेक्ट्रिक कार को बेचने में बहुत दिलचस्पी नहीं लेते हैं। डीलर्स कहते हैं कि यात्री कार की बिक्री में इलेक्ट्रिक कार की हिस्सेदारी सिर्फ दो प्रतिशत है और इसका बाजार सिर्फ पांच साल पुराना है। लोग पुरानी इलेक्ट्रिक कार को लेकर उत्साह नहीं दिखाते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दीपक तनेजा ने अगस्त 2022 में टाटा नेक्सन एक्स जेड प्लस इलेक्ट्रिक कार की खरीदारी यह सोच कर की थी कि वह इस कार से एक चार्ज में देहरादून की सफर तय कर लेगे, लेकिन ऐसा संभव नहीं हो सका। अब वह इस कार को बेचना चाहते हैं, लेकिन इलेक्ट्रिक कार होने के नाते इसे बेचना भी आसान नहीं दिख रहा है।

उन्होंने इस कार को 17.40 लाख रुपए (ऑन रोड प्राइस) में खरीदा था और मात्र डेढ़ साल पुरानी कार को पांच लाख कम दाम पर बेचने को तैयार है। यही कार अगर पेट्रोल डीजल की होती तो हाथोंहाथ बिक गई होती। सिर्फ तेनजा ही नहीं, उनके जैसे कई इलेक्ट्रिक कार मालिक अपनी कार बेचने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं।

नहीं खरीदना चाहते पुरानी इलेक्ट्रिक कार

कार डीलर्स भी अपने ग्राहकों को सेकेंड हैंड इलेक्ट्रिक कार के प्रति बहुत भरोसा नहीं दिला पाते हैं, इसलिए वे सेकेंड हैंड इलेक्ट्रिक कार को बेचने में बहुत दिलचस्पी नहीं लेते हैं। डीलर्स कहते हैं कि यात्री कार की बिक्री में इलेक्ट्रिक कार की हिस्सेदारी सिर्फ दो प्रतिशत है और इसका बाजार सिर्फ पांच साल पुराना है। शुरू के दो साल तो मुख्य रूप से टैक्सी या सरकारी ऑफिस में ही इलेक्ट्रिक कार चलाई जा रही थी।

इस साल अप्रैल में 3,35,123 यूनिट यात्री वाहन की बिक्री हुई और इनमें इलेक्ट्रिक कार की हिस्सेदारी 7,415 यूनिट की थी। वित्त वर्ष 2023-24 में 82,000 इलेक्ट्रिक कार की बिक्री हुई। दो साल पहले तो हिस्सेदारी और भी कम थी। सीमित उपलब्धता एवं जानकारी से लोग पुरानी इलेक्ट्रिक कार को लेकर उत्साह नहीं दिखाते हैं।

ये है मुख्य वजह

इसकी बैटरी को लेकर भी लोगों में संशय है। सोसायटी ऑफ मैनुफैक्चरर्स ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (एसएमईवी) के महादेशिक सीनियर सिंगल गिल के मुताबिक इलेक्ट्रिक कार की कीमत में 40 प्रतिशत हिस्सेदारी बैटरी की होती है और जैसे-जैसे बैटरी पुरानी होती है, उसकी क्षमता कम होती जाती है और इसका असर माइलेज पर भी दिखता है। इसलिए भी लोग पुरानी इलेक्ट्रिक कार लेने से कतराते हैं।

हालांकि इलेक्ट्रिक कार में बैटरी की गारंटी आठ साल की होती है, लेकिन अगर कोई चार साल पुरानी इलेक्ट्रिक कार खरीदता है तो चार साल बाद उसे नई बैटरी लेने के लिए नई कार की 40 प्रतिशत कीमत चुकानी होगी। पांच साल से अधिक पुरानी इलेक्ट्रिक कार तो ग्राहक बिल्कुल नहीं खरीदना चाहेंगे। इन सब कारणों से ही सेकेंड हैंड कार बेचने वाली कंपनियां इलेक्ट्रिक कार की कोई गारंटी नहीं



लेती है जबकि पुरानी पेट्रोल-डीजल कार पर ये कंपनियां गारंटी-वारंटी देती है।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अकादमी एंड रिसर्च विंग के चेयरमैन वी. गुलाटी कहते हैं, इलेक्ट्रिक कार की रिसेल अच्छी होने में अभी पांच साल लगेंगे और दुनिया भर में यही स्थिति है। उन्होंने बताया कि ईवी में ग्राहकों के पास विकल्प नहीं है, जहां डीजल-पेट्रोल कार में ग्राहक शुरु में प्रवेश करते हैं तो उनके

पास आठ-दस विकल्प होते हैं तो इलेक्ट्रिक कार में सिर्फ एक।

बैटरी और चार्जिंग सुविधा को लेकर ग्राहकों में अभी भरोसा नहीं जगा है। इलेक्ट्रिक कारों में एक इको-सिस्टम विकसित हो गया है, इसलिए पुराने इलेक्ट्रिक कारों में अभी पांच साल लगेंगे और दुनिया भर में यही स्थिति है। उन्होंने बताया कि ईवी में ग्राहकों के पास विकल्प नहीं है, जहां डीजल-पेट्रोल कार में ग्राहक शुरु में प्रवेश करते हैं तो उनके

अभी रिसेल मार्केट नहीं बन पाया है।

इलेक्ट्रिक कार के मालिकों ने बताया कि घर पर चार्ज करने पर उन्हें घरेलू डिजली दर के हिसाब से शुल्क देना पड़ता है, लेकिन हाईवे या अन्य सार्वजनिक जगहों पर चार्ज करने पर उन्हें 21 रुपए प्रति यूनिट प्लस जोएसटी के हिसाब से शुल्क चुकाना पड़ता है। चार्जिंग स्टेशन सभी जगहों पर उपलब्ध नहीं होने से भी इलेक्ट्रिक कार लोगों के जेहन में नहीं उतर पा रही है।

टाटा नेक्सन को मिला नया पेट्रोल और डीजल बेस वैरिएंट, पहले से हुई 1.10 लाख रुपये सस्ती

नेक्सन पेट्रोल को अब स्मार्ट (ओ) नाम से एक नया एंटी-लेवल वैरिएंट दिया गया है जिसकी कीमत 8 लाख रुपये है। यह वैरिएंट पिछले बेस वैरिएंट यानी स्मार्ट से 15000 रुपये ज्यादा किफायती है। टाटा नेक्सन डीजल को दो नए वैरिएंट मिलते हैं - स्मार्ट + और स्मार्ट + एस। पहला नया एंटी-लेवल वैरिएंट है जिसकी कीमत 10 लाख रुपये है जबकि बाद वाले की कीमत 10.60 लाख रुपये है।



नई दिल्ली। Mahindra XUV 3XO को हाल ही में किफायती कीमतों पर लॉन्च किए जाने के बाद Tata ने Nexon SUV की कीमतों में भी कटौती कर दी है। कंपनी ने Nexon के लिए नए बेस वैरिएंट लॉन्च किए हैं। अब इसकी शुरुआती कीमत 7.49 लाख (एक्स-शोरूम) हो गई है।

Tata Nexon की घटी कीमतें

नेक्सन पेट्रोल को अब स्मार्ट (ओ) नाम से एक नया एंटी-लेवल वैरिएंट दिया गया है, जिसकी कीमत 8 लाख रुपये है। यह वैरिएंट पिछले बेस वैरिएंट यानी स्मार्ट से 15,000 रुपये ज्यादा किफायती है। ऐसा लग रहा है कि नए वैरिएंट को XUV 3XO के निचले वैरिएंट को कंपीट करने के लिए पेश किया गया है, जिनकी कीमत 7.49 लाख रुपये है। इसके अलावा स्मार्ट + और स्मार्ट

+ एस वैरिएंट की कीमतें क्रमशः 30,000 रुपये और 40,000 रुपये कम की गई हैं। Tata Nexon Smart+ की कीमत अब 8.90 लाख रुपये है, जबकि Smart+ S की कीमत 9.40 लाख रुपये है।

डीजल वैरिएंट के नए प्राइस
टाटा नेक्सन डीजल को दो नए वैरिएंट मिलते हैं - स्मार्ट + और स्मार्ट + एस। पहला नया एंटी-लेवल वैरिएंट है, जिसकी कीमत 10 लाख रुपये है, जबकि बाद वाले की कीमत 10.60 लाख रुपये है। नए वैरिएंट के आने से नेक्सन डीजल की बेस कीमत 1.10 लाख रुपये कम हो गई है।

इंजन और परफॉरमेंस
कंपनी ने अपनी इस कॉम्पैक्ट एसयूवी में कोई मैकेनिकल बदलाव नहीं किया है। टाटा नेक्सन को 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन के साथ 120hp और 170Nm और 1.5-लीटर डीजल यूनिट के साथ पेश करता है, जो 115hp और 260Nm टॉर्क पैदा करता है। ट्रांसमिशन विकल्पों में 5-स्पीड मैनुअल, 6-स्पीड मैनुअल, 6-स्पीड एएमटी और साथ ही 7-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक शामिल हैं। माच में इस कॉम्पैक्ट एसयूवी को पांच नए ऑटोमैटिक वैरिएंट भी मिले थे।

2024 मारुति सुजुकी स्विफ्ट के बेस वैरिएंट में मिलते हैं ये फीचर्स, जानिए कौन सा है वैल्यू फॉर मनी ट्रिम

2024 Maruti Suzuki Swift के LXI ट्रिम की कीमत 6.49 लाख रुपये है और ये केवल मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ बेचा जाएगा जबकि अन्य सभी ट्रिम्स एएमटी या एएमटी के साथ खरीदे जा सकते हैं। कीमत कम रखने की वजह से ऐसा किया गया है। इसके VXI वैरिएंट को एएमटी में 7.29 लाख रुपये और एएमटी में 7.79 लाख रुपये की कीमत पर खरीदा जा सकता है।



नई दिल्ली। 2024 Maruti Suzuki Swift का बेस LXI वैरिएंट हैलोजन प्रोजेक्टर हेडलाइट्स, LED टेल लैंप, 6 एयरबैग, EBD के साथ ABS, ESP, HHA, रिवर्सिंग सेंसर, ISOFIX चाइल्ड सीट माउंट, मैनुअल AC, कोलेस एंटी, सेंट्रल लॉकिंग, फोर पावर विंडो, मैनुअली एडजस्टेबल विंग मिरर और एडजस्टेबल फ्रंट हेडरेस्ट जैसे फीचर्स के साथ आता है।

LXI वैरिएंट
LXI ट्रिम की कीमत 6.49 लाख रुपये है और ये केवल मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ बेचा जाएगा, जबकि अन्य सभी ट्रिम्स एएमटी या एएमटी के साथ खरीदे जा सकते हैं। कीमत कम रखने की वजह से ऐसा किया गया है।

VXI वैरिएंट
इसके VXI वैरिएंट को एएमटी में 7.29 लाख रुपये और एएमटी में 7.79 लाख रुपये की कीमत पर खरीदा जा सकता है। इस वैरिएंट में ओआरवीएम पर टर्न सिग्नल, फुल व्हील कवर, बांडी कलर ऑआरवीएम और डोर हैंडल, पार्सल

ट्रे, वॉयस असिस्टेंस के साथ 7 इंच की टचस्क्रीन, ऑटोए अपडेट, वायरलेस एपल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो इंटरफेस, ब्लूटूथ, यूएसबी टाइप-ए चार्जिंग मिलती है।

VXi (O) वैरिएंट
Vxi (O) की कीमत VXI वैरिएंट से 27,000 रुपये अधिक है। इसके लिए स्मार्ट की के साथ पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, इलेक्ट्रिकली लॉकडबल ओआरवीएम और कनेक्टेड फीचर्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

ZXi वैरिएंट
ZXi वैरिएंट में आपको एलईडी प्रोजेक्टर हेडलाइट्स, एलईडी डीआरएल, 15 इंच के अलॉय व्हील, हाइट एडजस्टेबल ड्राइवर सीट 6 स्पीकर ऑडियो, वायरलेस स्मार्टफोन चार्जर, रिपर वाइपर और वांशर, फॉलो-मी के साथ ऑटो हेडलैप जैसे अतिरिक्त फीचर्स मिलते हैं।

ZXi+ वैरिएंट
इसके ZXi+ वैरिएंट में फ्रंट एलईडी फोंग लाइट्स, चमड़े से लिपटे स्टीयरिंग व्हील, फ्रंट फुटवेल रोशनी, रिपर पार्किंग केमरा, 9 इंच का स्मार्टफोन प्रो + टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट डिस्प्ले, आर्कमिस ऑडियो और क्रूज कंट्रोल के साथ कई एडवांस फीचर्स मिलते हैं।

रॉयल एनफील्ड भारतीय बाजार में जल्द लॉन्च करेगी 2 नई 350 सीसी बाइक, नई डिटेल्स आई सामने

रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 जे-सीरीज इंजन प्लेटफॉर्म में ब्रांड के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2021 के अंत में बाजार में आने के बाद से इसे ग्राहकों से गर्मजोशी से स्वागत मिला है। जावा और येज्डी जैसे प्रतिस्पर्धी ब्रांड्स के लिए प्रतिस्पर्धी 300-350 सीसी बॉबर सेगमेंट में प्रवेश करने के लिए रॉयल एनफील्ड अपने मौजूदा क्लासिक मॉडल का एक अपडेटेड वर्जन पेश करने की तैयारी कर रहा है।

नई दिल्ली। Royal Enfield चालू वित्त वर्ष में 350 सीसी, 450 सीसी और 650 सीसी सेगमेंट में नई पेशकशों के साथ अपनी मोटरसाइकिल लाइनअप का विस्तार करने के लिए तैयार है। इन अपडेट के बीच, लोकप्रिय क्लासिक रेंज में संशोधन किया जाएगा, जिसमें फ्रेंस Classic 350 और एक संभावित बॉबर संस्करण की शुरुआत शामिल है। इसे भारतीय बाजार में Goan Classic 350 नाम दिए जाने से शोभावना है।

अपडेटेड RE Classic 350
रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350, जे-सीरीज इंजन प्लेटफॉर्म में ब्रांड के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2021 के अंत में बाजार में आने के बाद से इसे ग्राहकों से गर्मजोशी से स्वागत मिला है। मॉटियोर 350,



बुलेट 350 और हंटर 350 जैसे मॉडलों के साथ क्लासिक 350 ने ब्रांड की बिक्री मात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

रिपोटर्स के मुताबिक रेडो रोडस्टर मिड-लाइफ अपडेट प्राप्त करने में लाइनअप का नेतृत्व करने के लिए तैयार है। अपेक्षित परिवर्तनों में समग्र आकर्षण को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त सुविधाओं और ग्राफिक्स के साथ नई रंग योजनाओं की शुरुआत शामिल है। इसे मौजूदा 349 सीसी एसओएचसी एयर और ऑयल-कूल्ड इंजन के साथ ही पेश

किया जाना रखा जाएगा। ये पावरट्रेन 20 एचपी से थोड़ा अधिक और 27 एनएम का टॉर्क देता है और इसे 5-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जुड़ा रहेगा।

Royal Enfield Goan Classic 350

जावा और येज्डी जैसे प्रतिस्पर्धी ब्रांड्स के लिए प्रतिस्पर्धी 300-350 सीसी बॉबर सेगमेंट में प्रवेश करने के लिए, रॉयल एनफील्ड अपने मौजूदा क्लासिक मॉडल का एक अपडेटेड वर्जन पेश करने की तैयारी कर

रहा है। इस सिंगल-सीट बॉबर वैरिएंट में स्टैंडर्ड क्लासिक मॉडल की तुलना में रेड टॉर्क देता है और इसे 5-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जुड़ा रहेगा।

खबर है कि इसका नाम Goan Classic 350 रखा जाएगा, लेकिन आधिकारिक विवरण की अभी पुष्टि नहीं हुई है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि इसका लॉन्च आने वाले महीनों में इस CY के बाद अपडेटेड क्लासिक 350 की रिलीज से पहले होगा, क्योंकि इसका डिजाइन पेटेंट पहले ही लौक हो चुका है।

अप्रैल 2024 में रही सबसे ज्यादा इन 7-सीटर कारों की मांग, देखिए टॉप-10 गाड़ियों की लिस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

अप्रैल 2024 में टॉप-10 फैमिली कारों की बिक्री में महिंद्रा स्कोर्पियो ने मारुति सुजुकी अर्दिगा महिंद्रा बोलेरो और टोयोटा इनोवा को पीछे छोड़ते हुए चार्ट में पहला स्थान हासिल किया है। टोयोटा इनोवा क्रिस्टा और हाइक्रॉस की कुल बिक्री 7103 यूनिट की हुई जो 2023 में इसी अवधि के दौरान बेची गई 4837 इकाइयों की तुलना में 47 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

नई दिल्ली। इंडियन मार्केट में सबसे ज्यादा SUV बिकती हैं और 7-सीटर कारों की भा अच्छी-खासी मांग है। अपने इस लेख में हम आपके लिए पिछले महीने बिकी टॉप-10 फैमिली कारों की लिस्ट लेकर आए हैं।

1. अप्रैल 2024 में टॉप-10 फैमिली कारों की बिक्री में महिंद्रा स्कोर्पियो ने मारुति सुजुकी अर्दिगा, महिंद्रा बोलेरो और टोयोटा इनोवा को पीछे छोड़ते हुए चार्ट में पहला स्थान हासिल किया है। महिंद्रा स्कोर्पियो ने 14,807 इकाइयों

की बिक्री का आंकड़ा हुआ है।
2. मारुति सुजुकी अर्दिगा सात-सीटर वॉल्यूम चार्ट में दूसरे स्थान पर रही, इसी अवधि के दौरान पिछले साल बेची गई 5,532 इकाइयों की तुलना में 145 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि के साथ 13,544 इकाइयों की बिक्री दर्ज की गई।
2023 की अवधि के दौरान, महिंद्रा स्कोर्पियो क्लासिक और स्कोर्पियो एन की कुल बिक्री 9,617 इकाई थी, जो साल-दर-साल 54 प्रतिशत की वृद्धि का संकेत देती है।
3. तीसरे स्थान पर रहते हुए, बोलेरो ने अप्रैल 2024 में 9,537 इकाइयों की घरेलू रैली हासिल की है, जो पहले बेची गई 9054 इकाइयों की तुलना में 5 प्रतिशत की साल-दर-साल वृद्धि के साथ थी।
4. टोयोटा इनोवा क्रिस्टा और हाइक्रॉस की कुल बिक्री 7,103 यूनिट की हुई, जो 2023 में इसी अवधि के दौरान बेची गई 4,837 इकाइयों की तुलना में 47 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।
5. इस बीच, महिंद्रा एक्सयूवी700 ने पिछले महीने कुल 6,134 इकाइयों की बिक्री के साथ पांचवां स्थान हासिल किया। पिछले वर्ष की समान अवधि के दौरान 4,757 इकाइयों की तुलना में साल-दर-साल बिक्री में 29 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई।



6. किआ कैरेंस 5,328 इकाइयों के साथ छठे स्थान पर रही, जो पिछले साल की समान अवधि में बेची गई 6,107 इकाइयों की तुलना में 13 प्रतिशत की गिरावट है।
7. क्रम में नीचे जाते हुए, मारुति सुजुकी XL6 ने अप्रैल 2023 में 2,860 इकाइयों के मुकाबले 3,509 इकाइयों की बिक्री के साथ 23 प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्ज की।
8. टोयोटा फॉर्च्यूनर की पिछले महीने 2,325 यूनिट्स की बिक्री हुई, जबकि बारह महीने पहले इसी अवधि के दौरान 2,578

यूनिट्स की बिक्री हुई थी। इस तरह सालाना बिक्री में 10 प्रतिशत की गिरावट आई है।
9. टाटा सफारी 1,716 यूनिट की बिक्री के साथ नौवें स्थान पर रही, जो 2023 में इसी अवधि में बेची गई 2,029 इकाइयों की तुलना में 15 प्रतिशत की गिरावट को दर्शाती है।
10. रेनो ट्राइबर 1,671 यूनिट की बिक्री के साथ टॉप-10 की लिस्ट में अंतिम स्थान पर है। वहीं, 2023 में इसी अवधि के दौरान 2,079 यूनिट की बिक्री हुई, जो सालाना स्तर पर 20 प्रतिशत गिरावट को दर्शाती है।

इलेक्ट्रिक फ्लाइंग टैक्सी विकसित करने वाले IIT-मद्रास स्टार्टअप की आनंद महिंद्रा ने की सराहना

नई दिल्ली। महिंद्रा समूह के चेयरमैन आनंद महिंद्रा ने इलेक्ट्रिक फ्लाइंग टैक्सी विकसित करने वाले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मद्रास स्टार्टअप की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यह संस्थान दुनिया के सबसे रोमांचक और सक्रिय इनक्यूबेटर्स में से एक बन गया है।

पोस्टर कर की तारीफ

महिंद्रा ने एक्स पर पोस्ट किया कि अगले साल तक उड़ने वाली इलेक्ट्रिक टैक्सी बनाने के लिए आईआईटी मद्रास में एक कंपनी बनाई जा रही है। संस्था को धन्यवाद देते हुए, उन्होंने आगे कहा कि पूरे भारत में महत्वाकांक्षी इनक्यूबेटर्स की तेजी से बढ़ती संख्या के साथ हमें अब ऐसे देश के रूप में नहीं देखा जाता है, जहां वास्तविक इनोवेटर्स की कमी है। महिंद्रा ने लिखा कि साहसिक आकांक्षाएं मायने रखती हैं। कोई सीमा स्वीकार न करें।

यूजर्स ने की टिप्पणी

शेयर किए जाने के बाद से उनकी पोस्ट को 190K से ज्यादा बार देखा जा चुका है। कई उपयोगकर्ताओं ने टिप्पणियों में अपने विचार भी साझा किए। एक उपयोगकर्ता ने लिखा, 'रोमांचक समय, यह साहसी सोच जड़े जमा रही है। हमारे विशाल प्रतिभा पूल और एक सहायक वातावरण के साथ, भारतीय नवप्रवर्तक वास्तव में उड़ान भर रहे हैं। एक अन्य यूजर ने कहा कि भारत के इनक्यूबेटर भविष्य की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं, और आईआईटी मद्रास अपने इलेक्ट्रिक फ्लाइंग टैक्सी प्रोजेक्ट के साथ इसका नेतृत्व कर रहा है। यह उस तरह का नवाचार है जो एक देश को मानचित्र पर रखता है और सपने देखने वालों और काम करने वालों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करता है।

इस सप्ताह की शुरुआत में, आईआईटी मद्रास ने कहा कि उसने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान अपने पूर्व छात्रों, उद्योग और व्यक्तिगत दाताओं से 513 करोड़ रुपये की सर्वाधिक उच्च राशि जुटाई। FY 24 के दौरान पूर्व छात्र और कॉर्पोरेट भागीदार से संस्थान ने 717 करोड़ रुपये की कुल नई प्रतिज्ञाएं भी प्राप्त कीं।

यूपीआई से बढ़ रही फिजूलखर्ची की लत? जानिए क्या कह रहे एक्सपर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

यूनिफाइड पेमेंट्स सिस्टम (UPI) ने भारत में डिजिटल पेमेंट का कायाकल्प कर दिया। आज शॉपिंग मॉल से लेकर सब्जी की दुकान पर यूपीआई पेमेंट की सुविधा मिल जायेगी। लोग रोजमर्रा का सामान तो यूपीआई के जरिए खरीद ही रहे वे महंगे होम अप्लायंसेज महंगे गैजेट और डिजाइन कपड़ों के बिल का भुगतान भी इसी से कर रहे हैं। लेकिन इससे फिजूलखर्ची बढ़ने की बात भी कही जा रही है।

नई दिल्ली। यूनिफाइड पेमेंट्स सिस्टम (UPI) ने भारत में डिजिटल पेमेंट का कायाकल्प कर दिया। आज आपको बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल से लेकर पान और सब्जी की दुकान पर यूपीआई के जरिए डिजिटल पेमेंट की सुविधा मिल जायेगी। लोग रोजमर्रा का सामान तो यूपीआई के जरिए खरीद ही रहे, वे महंगे होम अप्लायंसेज, महंगे गैजेट और डिजाइन कपड़ों के बिल का भुगतान भी इसी से कर रहे हैं।

भारत के पेमेंट सिस्टम को डिजिटल करने और नकदी का चलन कम करने के सफर में इसकी भूमिका काफी अहम है। लेकिन, इस सहीलियत का एक नकारात्मक पक्ष भी है। समाचार एजेंसी आईएनएस ने एक्सपर्ट के हवाले से बताया कि यूपीआई से लोगों को फिजूलखर्ची की भी लत लग रही है। वे ऐसे भी सामान खरीद ले रहे हैं, जिनकी असल में उस

वक्त उन्हें जरूरत नहीं होती।

यूपीआई से क्यों बढ़ रही फिजूलखर्ची?

UPI/QR कोड के माध्यम से खरीदारी बढ़ने की सबसे बड़ी वजह है स्मार्टफोन। आज देश की बड़ी आबादी के पास स्मार्टफोन और डेटा की पहुंच हो गई है। वे स्मार्टफोन के जरिए किसी भी चीज का पेमेंट चुटकियों में कर देते हैं। यही फिजूलखर्ची की वजह भी बन रहा है।

IIT दिल्ली का एक हालिया सर्वे बताता है कि यूपीआई और अन्य डिजिटल पेमेंट ऑप्शन की वजह से करीब 74 फीसदी लोग 'जरूरत से ज्यादा खर्च' कर रहे हैं। दरअसल, नकद पैसों की तुलना में डिजिटल मोड से पेमेंट करना काफी आसान है। नकदी में कभी चेंज जैसी समस्या हो जाती है, या फिर उस वक्त आपके पास उतने पैसे नहीं होते, तो आप खरीदारी से रुक जाते हैं। लेकिन, यूपीआई या किसी दूसरे डिजिटल पेमेंट में कोई दिक्कत नहीं होती। आपके बैंक अकाउंट में जितने पैसे होते हैं, समझ लीजिए कि वे आपके स्मार्टफोन में हैं। यहां तक कि आप क्रेडिट कार्ड जैसे माध्यमों के इस्तेमाल से बैंक अकाउंट से ज्यादा भी खर्च कर सकते हैं। आप दोस्तों या रिश्तेदारों से फौरन उधार भी ले सकते हैं।

UPI से फिजूलखर्ची?



क्या कह रहे हैं इंडस्ट्री एक्सपर्ट?

मार्केट इंटेलेजेंस फर्म सीएमआर में इंडस्ट्री इंटेलेजेंस ग्रुप के हेड प्रभु राम ने समाचार एजेंसी आईएनएस को बताया, 'इस तरह की सहीलियत से फिजूलखर्ची बढ़ने की काफी संभावना रहती है, क्योंकि यह डिजिटल मोड रहता है। इसमें हाथ से नकद पैसे देने की तरह नहीं लगता कि आप कितना पैसा खर्च कर रहे हैं।'

नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) के लेटेस्ट डेटा से पता चला है कि यूपीआई ट्रांजेक्शन की संख्या अप्रैल में 1,330 करोड़ तक पहुंच गई। इसमें सालाना आधार पर 50 फीसदी का इजाफा हुआ है। पिछले साल

यूपीआई लेनदेन लगभग 60 फीसदी बढ़कर रिकॉर्ड 11,768 करोड़ तक पहुंच गया था।

विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में उपभोक्ता खर्च बढ़ रहा है। अब लोग कार, स्मार्टफोन, टीवी और अन्य वस्तुओं पर जमकर पैसा खर्च कर रहे हैं। इससे देश की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा मिल रहा है। हालांकि, यह भी देखा जा रहा है कि यूपीआई की वजह से लोग कुछ ऊंचे दाम वाली वस्तुओं पर जरूरत से ज्यादा खर्च कर रहे हैं। और यह चलन लगातार बढ़ रहा है।

UPI की शुरुआत से अब तक के अहम पड़ाव

2016

रिफंड, मल्टीपल बैंक अकाउंट और ऑफलाइन पेमेंट का सपोर्ट

2020

भारत क्यूआर - सीमलेस यूपीआई पेमेंट के लिए यूनिवर्सल QR कोड सपोर्ट

2022

क्रेडिट लाइन पेमेंट ऑप्शन, UPI Lite X (ऑफलाइन ट्रांजेक्शन सपोर्ट), टैप एंड पे (एनएफसी-इन्वेल्ड सपोर्ट), वाईस कमांड से पेमेंट

2024

पर्सन टू पर्सन (P2P) और पर्सन टू मर्चेन्ट (P2M) पेमेंट्स के साथ शुरुआत

2017

QR कोड पेमेंट्स, वाईस कमांड और वर्चुअल असिस्टेंट सपोर्ट

2021

टिकटबुकिंग पेमेंट के लिए ऑटोपे सपोर्ट

2023

विदेश पहुंचा यूपीआई

10 वर्षों में 138 अरब डॉलर होगा डिफेंस सेक्टर, क्या शेरों में बनेंगे कमाई के मौके?

अगले 10 वर्षों के दौरान भारत के रक्षा क्षेत्र बाजार का आकार 138 अरब डॉलर पर पहुंच सकता है। रेंटिंग एजेंसी नोमुरा का कहना है कि रक्षा उपकरणों प्रौद्योगिकियों और सेवाओं की बढ़ती मांग से इस क्षेत्र के बाजार को बढ़ने में मदद मिलेगी। पिछले कुछ समय में डिफेंस सेक्टर के शेरों ने जोरदार रिटर्न दिया है। आइए जानते हैं कि क्या अभी भी उनमें कमाई का मौका है।

डिफेंस कंपनी	शेयर प्राइस	6 महीने में रिटर्न
हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड	3,877.00 रुपये	88.17%
डेवा पेट्रॉल (इंडिया) लिमिटेड	2,812.00 रुपये	50.50%
सिका इंडस्ट्रियल सिस्टम्स लिमिटेड	1,985.40 रुपये	58.00%
भारत हायनामिक्स लिमिटेड	1,868.00 रुपये	72.52%
हाई एनर्जी बैटरीज (इंडिया) लिमिटेड	784.95 रुपये	38.17%
तनेजा एयरोस्पेस एंड एविएशन लिमिटेड	440.00 रुपये	76.25%



स्वदेशी मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन और तकनीकी विकास जैसे उपायों से रक्षा क्षेत्र का समर्थन कर रही है।

डिफेंस सेक्टर के शेरों में जोरदार रिटर्न

डिफेंस सेक्टर की कंपनियों के शेयर पिछले कुछ समय से काफी शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें से

लगभग सभी कंपनियों ने पिछले 6 महीने में 50 फीसदी या इससे अधिक का रिटर्न दिया है। डिफेंस सेक्टर की सबसे बड़ी कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स ने तो सबसे रिकॉर्ड तोड़ दिया है। इसने पिछले 6 महीने में 88.17 फीसदी और 1 साल में 160.73 फीसदी का बंपर रिटर्न दिया है।

शहरों में सुस्त रहेगा घरेलू खर्च, ग्रामीण इलाकों में पानी की तरह बहेगा पैसा; जानिए क्या है पूरा मामला

वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान भारत के ओवरऑल घरेलू खर्च (Household Spending) में सुस्ती का अनुमान है। गुड्स और सर्विसेज पर घरेलू खर्च में ग्रोथ काफी कम रहेगी। इसमें पिछले साल के मुकाबले सिर्फ 4-5 फीसदी का उछाल दिख सकता है। साल 2011 से 2020 के दौरान इसमें 6.5-7 फीसदी का तेज उछाल दिखा था। हालांकि रूरल और लग्जरी खर्च में सुधार होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली। भारत का घरेलू खर्च (Household Spending) वित्त वर्ष 2024-25 में सुस्त बनी रहने का अनुमान है। हालांकि, रूरल और लग्जरी खर्च में सुधार होने की उम्मीद है। यह बात स्विटजरलैंड की फाइनेंशियल सर्विसेज देने वाली UBS की रिपोर्ट 'इंडिया इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स' में कही गई है।

क्या कहती है UBS की रिपोर्ट? UBS की रिपोर्ट का अनुमान है कि गुड्स और सर्विसेज पर घरेलू खर्च में ग्रोथ काफी कम रहेगी। इसमें पिछले साल के मुकाबले सिर्फ 4-5 फीसदी का उछाल दिख सकता है। साल 2011 से 2020 के दौरान इसमें 6.5-7 फीसदी का तेज उछाल दिखा। उसकी तुलना में यह ग्रोथ काफी सुस्त मानी जा रही है।

क्यों नहीं ज्यादा बढ़ेगा घरेलू खर्च?



ग्रामीण इलाकों में लोगों की बढ़ेगी कमाई

रिपोर्ट कुछ अहम वजहें भी बताती है, जिसके चलते घरेलू खर्च में मजबूत उछाल आने के आसार नहीं हैं। एक कारण यह है कि अब शहरों में रहने वाले लोग पहले की तरह खर्च नहीं करते, क्योंकि कंपनियां पहले की तरह वेतन नहीं बढ़ा रहीं। साथ ही, लोग अब घर को छोड़कर दूसरी चीजें खरीदने के लिए कर्ज भी ज्यादा नहीं ले रहे। UBS की रिपोर्ट का यह भी कहना है कि अब बैंक कर्ज देने के मामले में ज्यादा सतर्क हो गए हैं।

लोकन यहां पानी की तरह बहेगा पैसा ओवरऑल खर्च में भले ही बड़ा इजाफा ना हो, लेकिन समाज के कुछ हिस्से महंगी चीजों की खरीदारी जारी रखेंगे। UBS की रिपोर्ट के मुताबिक, रईस लोग पहले की पैसे उड़ाना जारी रख सकते हैं। वहीं, ग्रामीण इलाकों में भी



घरेलू खर्च में कुछ तेजी आ सकती है। पिछले दिनों मौसम विभाग ने अनुमान जताया कि इस साल मानसून सामान्य से अच्छा रहेगा। अगर अच्छे मानसून से कृषि

उपज बढ़ती है, तो ग्रामीण इलाकों में डिमांड में तेजी आ सकती है। अगर सरकार कृषि उत्पादों के निर्यात को इजाजत देती है, तो भी रूरल डिमांड बढ़ेगी।

कर्ज चुकाने के पैसे नहीं, क्या दिवालिया हो जाएगा पाकिस्तान? IMF ने जताई ये चिंता

परिवहन विशेष न्यूज

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने पाकिस्तान की कर्ज चुकाने की क्षमता पर गंभीर संदेह जताया है। IMF का कहना है कि पाकिस्तान भारी नकदी संकट से जूझ रहा है और उसे लोन रिपेमेंट में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। IMF की सपोर्ट टीम पाकिस्तानी अधिकारियों से बातचीत करने के लिए इस्लामाबाद पहुंची है। पाकिस्तान एक बार फिर बेलआउट पैकेज मांग रहा है।

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र की फाइनेंशियल एजेंसी-अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने पाकिस्तान की कर्ज चुकाने की क्षमता पर गंभीर संदेह जताया है। IMF का कहना है कि पाकिस्तान भारी नकदी संकट से जूझ रहा है और उसे लोन रिपेमेंट में बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल, पाकिस्तान ने एकसटडेड फंड फैसिलिटी (EFP) के तहत नए बेलआउट पैकेज की गुजारिश की थी। इसके बाद IMF की सपोर्ट टीम पाकिस्तानी अधिकारियों से बातचीत करने के लिए इस्लामाबाद पहुंची है। उसी ने पाकिस्तान के कर्ज चुकाने की क्षमता पर संदेह जताया है।

पाकिस्तान के जियो न्यूज ने पिछले दिनों पाकिस्तान पर अपनी स्टफ रिपोर्ट जारी की थी। इसमें उसने IMF के हवाले से कहा, 'पाकिस्तान की फंड चुकाने क्षमता काफी कमजोर है। इसमें कई जोखिम भी हैं। पाकिस्तान जरूरी नीतियों पर अमल करने तक के लिए भी बाहरी मदद पर बुरी तरह से निर्भर है।'

रिपोर्ट के मुताबिक, 'पाकिस्तान आर्थिक सुधारों को अपनाने में देरी कर रहा है। उसका विदेशी मुद्रा भंडार भी

काफी कम हो गया है। कैश फ्लो भी बड़ी गिरावट आई है। सामाजिक और सियासी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। इन सबके चलते नीतियां लागू करने में भी दिक्कत हो रही है। उसका लोन रिपेमेंट कैपिसिटी और क्रेडिट स्ट्रेबिलिटी भी खत्म हो गई है।'

पाकिस्तान को भारी कर्ज की जरूरत

ग्लोबल लेंडिंग IMF का कहना है कि पाकिस्तान को अगले पांच साल के दौरान 123 अरब डॉलर की फंडिंग की जरूरत होगी। समाचार एजेंसी पीटीआई ने सूत्रों के हवाले से बताया कि IMF की सपोर्ट टीम पाकिस्तान के वित्तीय दल के साथ अगले लॉन्ग टर्म लोन प्रोग्राम के बारे में चर्चा करेगी। वहीं, आगे का फैसला IMF मिशन लेगा, जो 16 मई को पाकिस्तान आएगा। वह अलग-अलग विभागों से डेटा लेगा और मौजूदा वित्त वर्ष के बजट के बारे में भी चर्चा करेगा। IMF की टीम 10 दिनों तक पाकिस्तान में रहेगी। पाकिस्तान ने क्लाइमेट फाइनेंसिंग के तहत तीन साल के लिए 6 और 8 अरब डॉलर के अगले बेलआउट पैकेज की मांग की है।

हालांकि, IMF पहले ही साफ कर चुका है कि पाकिस्तान को आर्थिक सुधारों में तेजी लानी होगी। इसमें अपनी आमदनी बढ़ाने के साथ विदेशी कर्ज घटाने का उपाय करने जैसी चीजें शामिल हैं।

चीन, सऊदी भी कर्ज ले रहा पाक

इस बीच पाकिस्तान बाहरी वित्तपोषण में 23 अरब डॉलर के भारी अंतर को पूरा करने के लिए चालू वित्त वर्ष में चीन जैसे प्रमुख सहयोगियों से करीब 12 अरब डॉलर का कर्ज लेने वाला है। पाकिस्तान सरकार असल में IMF मिशन टीम के आने से पहले बजट टारगेट को हासिल करना चाहती है। पीटीआई ने वित्त मंत्रालय के अंदरूनी सूत्रों के हवाले से

बताया कि पाकिस्तान सऊदी अरब से 5 अरब डॉलर, संयुक्त अरब अमीरात से 3 अरब डॉलर और चीन से 4 अरब डॉलर की मदद लेगा। वहीं, पाकिस्तान को नए लोन प्रोग्राम के तहत IMF से 1 अरब डॉलर से अधिक की मदद मिलेगी।

पाकिस्तान ने अनुमानित बजट में वर्ल्ड बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक से भी नई फंडिंग को शामिल किया है। पाकिस्तान वित्तीय संस्थानों के साथ नए लोन प्रोग्राम के समझौते करेगा। पाकिस्तान का बजट जून में आ सकता है। वहीं, IMF के साथ नए लोन प्रोग्राम की बात मई के मध्य में शुरू होने की उम्मीद है।

दिवालिया होने वाला था पाक

पाकिस्तान पिछली गर्मियों में डिफॉल्ट होने से बाल-बाल बचा था। दरअसल, IMF की शर्तें मानने में पाकिस्तान आनाकानी कर रहा था। ऐसे में IMF भी कर्ज देने को राजी नहीं हो रहा था। हालांकि, IMF ने ऐन मौके पर बेलआउट पैकेज को मंजूर करके पाकिस्तान को दिवालिया होने से बचा लिया।

अब पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में कुछ सुधार जरूर आया है। मुद्रास्फीति पिछले साल मई में 38 प्रतिशत के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गई थी। वहीं, इस साल अप्रैल में यह घटकर 17 प्रतिशत के स्तर पर आ गई। इससे आम जनता को महंगाई से कुछ राहत मिली है।

क्या होता है बेलआउट पैकेज?



बेलआउट पैकेज दरअसल किसी देश या फिर कंपनी को दिवालिया होने से बचाने के लिए दी जाने वाली वित्तीय मदद है। यह कर्ज, नकद, बॉन्ड या फिर स्टॉक खरीद के रूप में आ सकता है। कई बार बेलआउट पैकेज को वापस लौटाने की शर्त भी होती है और कई बार नहीं भी होती। लेकिन, इसका समय-समय पर निरीक्षण और निगरानी की जाती है।

बेलआउट पैकेज का मकसद किसी ऐसे देश या बिजनेस को सपोर्ट देना होता है, जिसका देश या विदेश स्तर पर व्यापक असर पड़ सकता है। लाखों लोगों की रोजी-रोटी प्रभावित हो

सकती है। अब जैसे पाकिस्तान की बात करें, तो उसके दिवालिया होने से करोड़ों लोग प्रभावित होंगे। पाकिस्तान परमाणु क्षमता से लैस मुल्क भी है। उसके दिवालिया होने की सूरत में यह घातक हथियार गलत हाथों में भी पड़ सकता है, जिसका अंजाम काफी खतरनाक हो सकता है।

यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं लगातार बेलआउट पैकेज देकर पाकिस्तान को दिवालिया होने से बचाने की कोशिश में लगी हैं।

